अमृत प्रार्थना
भक्त ध्रुवजी समान

आज भक्त ध्रुव के समान भगवान से प्रार्थना करेंगे।
हे दयानिधि! हम सभी बालक आप की शरण में आए हैं। आप दया के सागर हैं। कृपा के सागर हैं। हम पर दया करें। हम पर कृपा करें। यह सारा ब्रह्मांड आपके ही प्रकट है।
आपके ही उदर से लेकर प्रकट हुआ है। जिस प्रकार माँ के गर्भ से शरीर की उत्पत्ति होती है,
वैसे ही आपके ही गर्भ से इस पूरे ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई है तो इसका तात्पर्य है कि हम भी आपके ही गर्भ से प्रकट हुए हैं।
अतः हम आपके बालक हैं, यह इसका प्रमाण है। लेकिन माँ के गर्भ से अंधे, लूले, लंगड़े ,बहरे ,पागल और मरे हुए बालक भी जन्म लेते हैं और माँ उसमें कुछ नहीं कर सकती।
जो भी बालक पैदा हुआ उसका पालन पोषण कर सकती है। उसमें कुछ सामर्थ नहीं है।
यदि आपमें समर्थ है तो आपके गर्भ से हमारा जैसा भी जन्म हुआ अर्थात हमारे पास आध्यात्मिक वाणी नहीं है,आध्यात्मिक मन- बुद्धि- चित्त नहीं, आध्यात्मिक नेत्र नहीं है,आदि-आदि ।तो हम चाहे जैसे भी हैं, भले हैं, बुरे हैं, आपके हैं और हम में जो भी गलतियाँ हैं, जो भी कमियाँ हैं, जो भी त्रुटियां हैं, वह आप दूर कर सकते हैं क्योंकि आप सामर्थशाली हैं। और जब हम आपकी शरण में आ ही गए तो हम पतित नहीं रह गए। हम पावन हो गए।
आप पतित पावन हैं। आपकी शरण में आने के उपरांत हम पावन हो गए।
आप पतित पावन है ।आपकी शरण में आने के उपरांत हम पावन हो गए। अब आपसे कृपा चाहते हैं कि आप दया करके हम हमें परम पावन बना दें। हमारे दोषों को, गलतियों को और अपराधों को देख कर हमसे रुष्ठ ना हो,हम पर क्रोध ना करें।
जिस प्रकार एक छोटा बालक माँ की गोद में ही बार बार मल-मूत्र का परित्याग कर देता है। लेकिन फिर भी माफ बड़े प्रेम से स्नान करके, और पुनः सिंगार करके उसे दूसरे की गोद में जाने योग्य बना देती है,वैसे ही मैं बार-बार गलती करता हूं, अपराध करता हूं।,मुझसे बार-बार त्रुटियां होती है,कुछ जानबूझकर भी होती है, कुछ अनजाने में होती है, कुछ प्रारब्ध के वशीभूत होकर हो जाती है, माया के वशीभूत होकर के हो जाती है ।लेकिन जैसे माँ बालक का श्रृंगार कर देती है,खिन्न नहीं होती, क्षुब्ध नहीं होती, ऐसे ही हे प्रभु! आप भी मेरे इन अपराधों को क्षमा करें! क्षमा करें!खिन्न ना हों! क्षुब्ध ना हो!

और जिस प्रकार से माता पिता अपने पुत्र के अपराध को क्षमा करते हैं,सद्गुरु अपने शिष्य के अपराध को जिस प्रकार से क्षमा करते हैं, भगवान अपने भक्तों के अपराध को जिस प्रकार से क्षमा करते हैं, आप भी मेरे इन अपराधों को क्षमा करें! क्षमा करें !
और मुझे अपने चरणों में स्थान दें! मुझे अपने चरणों का पुष्प बनाएं!आपके माथे का कलंक ना बन जाऊं। ऐसी कृपा करें! आपका भक्त बन जाऊं!